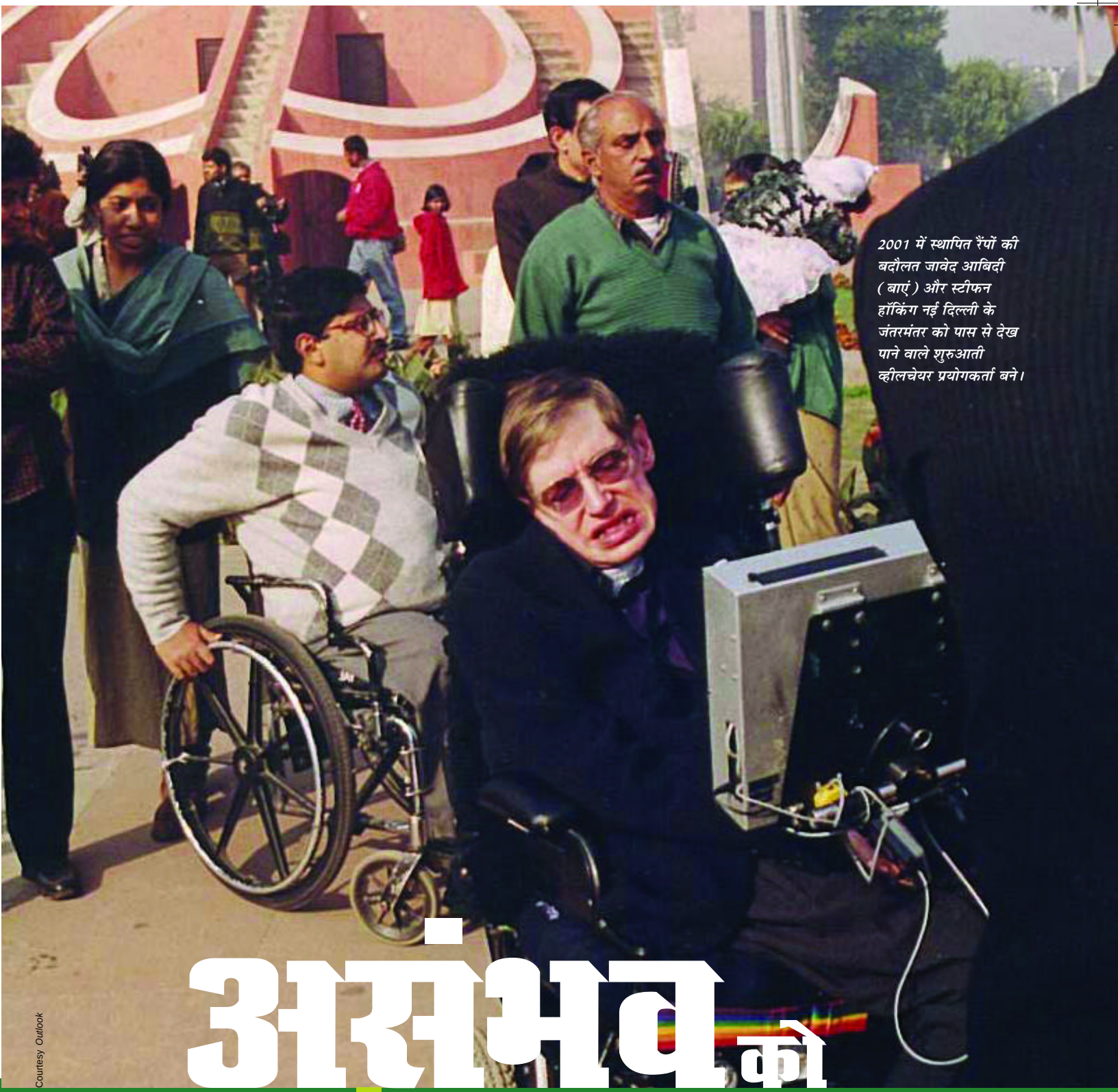

2001 में स्थापित रैंपों की बदौलत जावेद आबिदी (बाएं) और स्टीफन हॉकिंग नई दिल्ली के जंतरमंतर को पास से देख पाने वाले शुरुआती व्हीलचेयर प्रयोगकर्ता बने।

Courtesy *Outlook*

असंभव को संभव बनाने की धुन

लौरिंडा कीज़ लौंग

एक नेत्रहीन अमेरिकी महिला और उसका कुत्ता, व्हीलचेयर पर चलने-फिरने वाला एक भारतीय पत्रकार और ब्रिटेन का एक विकलांग भौतिकविद दिखा रहे हैं कि शारीरिक रूप से अक्षम लोग कैसे हमारी दुनिया में योगदान कर सकते हैं और उसका आनंद उठा सकते हैं।

ब्रिटिश भौतिकविद स्टीफन हॉकिंग 2001 में जब भारत आ रहे थे तो उन्हें बताया गया कि नई दिल्ली के लालकिला, कुतुबमीनार और जंतरमंतर जैसे ऐतिहासिक स्मारकों में उनकी व्हीलचेयर को ले जाना असंभव है। इसके बावजूद उनके जाने से पहले उनके और व्हीलचेयर पर चलने-फिरने वाले बहुत से भारतीयों के लिए इन स्मारकों को नजदीक से देखने के वास्ते रैंप बनाए गए। अब भारतीय वास्तुकला के सर्वाधिक प्रसिद्ध अजूबों तक व्हीलचेयर पर चलने-फिरने वाले लोगों की पहुंच है।

जावेद आबिदी ने जब पत्रकारिता शुरू की तो उन्हें बताया गया कि वह ज्यादा से ज्यादा डेस्क पर संपादन कार्य करने की उम्मीद कर सकते हैं। इसके बावजूद व्हीलचैयर पर चलने-फिरने वाले रिपोर्टर ने देशभर की यात्रा की, जानीमानी हस्तियों और राजनेताओं के साक्षात्कार लिए और अन्य भारतीय पत्रकारों की तरह विभिन्न घटनाओं की रिपोर्टिंग की जिम्मेदारी निभाई।

अमेरिकी नेत्रहीन महिला जॉयस केन भारत की संस्कृति और लोगों से रूबरू होने, अपने रिश्तेदारों से मिलने और नेत्रहीनों के स्वावलंबन को बढ़ावा देने के बारे में अपने अनुभवों को बांटने के लिए भारत आना चाहती थीं, उनकी मां ने कहा कि ऐसा करना असंभव है। इसके बावजूद केन ने अपनी आंखें बने अपने कुत्ते कोरी के साथ घूमते हुए भारत की एक महीने की यात्रा पूरी की। उन्होंने अहमदाबाद में मोहनदास कर्मचंद गांधी के चरखे को छुआ, बेंगलूर में नेत्रहीनों की रमन महर्षि अकादमी में उन्होंने स्पर्श के जरिये सीखने के तरीके से नृत्य सीखा, मुंबई में नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड के छात्रों द्वारा क्रिसमस पर सजावट के लिए बनाई गई चीजों को उन्होंने अपनी उंगलियों से छूकर जांचा-परखा।

केन का कहना था कि उन्होंने भारत को अपने कानों से सुनकर और अपनी नाक से सूंघकर महसूस किया। उनकी यात्रा मीडिया में चर्चा का विषय रही। उन्होंने इंडियन एयरलाइंस के विमान से यात्रा की और उनका गाइड बना कुत्ता खामोशी से उनके पैरों के पास बैठा रहता। हालांकि एक सुरक्षा गार्ड ने कोरी का बोर्डिंग पास देखने की जिद की। वह कोरी के साथ होटलों में रुकीं और रेस्तरांओं में खाना खाया। अमेरिकी कानून के तहत विकलांगों को मिले अधिकारों और विकलांगों को राज्य एवं संघीय सरकारों द्वारा शिक्षा, प्रशिक्षण और साजोसामान मुहैया कराने के मुद्दों पर उनके विचार सुनने के लिए सभागारों में जबर्दस्त भीड़ रही।

ANNE GRIMES

जॉयस केन की आंखें बन गए उनके कुत्ते कोरी को सहलाते मुंबई के हेलेन केलर इंस्टिट्यूट फॉर द डैफ एंड ब्लाइंड के छात्र। इस दौरान कोरी बहुत धीरज से शांत बनी रही।

आठ साल पहले हृदय की शल्य चिकित्सा के बाद जब केन होश में आईं तो उनकी आंखों की रोशनी जा चुकी थी। उसके बाद अमेरिकी कानून के तहत विकलांगों को मिले अधिकारों ओर सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई सुविधाओं के बूते वह सक्रिय नागरिक बनी रह सकीं। डायबिटीज के कारण वह धमनियों के छोटे होने की बीमारी की शिकार हो गईं। इसके कारण ऑपरेशन के समय उनकी नेत्र रक्त वाहिकाओं में पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं रह पाईं और डॉक्टर भी इस बारे में नहीं जान सके।

केन कहती हैं, ''मैंने जो सबसे बड़ी चीज खोई, वह मेरी आंखों की रोशनी नहीं बल्कि मेरी आजादी थी। कोरी और अमेरिकी विकलांगता कानून के तहत मिले अधिकारों के बूते मैं उसका कुछ हिस्सा वापस पाने में सफल रही हूं। अमेरिका में लक्ष्य यह होता है कि आपको रोजगार मिले, आप करदाता बनें और बाकी सभी लोगों की मदद करने के काबिल हों। कानून ने मुझे शिक्षा का अधिकार दिया। आंखों की रोशनी खोने के बाद मैं फिर कॉलेज गई। मैंने वहां प्रशिक्षण लिया जिससे कि मैं मेडिकल ट्रांस्क्राइबर के रूप में काम कर सकूं। कानून के तहत मुझे अपनी पसंद की जगहों पर अपने गाइड कुत्ते के साथ जाने का अधिकार मिला था। इसके तहत भवनों तक विकलांगों की पहुंच सुनिश्चित होती है और सार्वजनिक स्थलों पर ब्रेल संकेतक लगाना जरूरी है।''

हालात हमेशा इतने अच्छे नहीं थे। अमेरिका में विकलांग लोगों ने मिलकर ऐसे कानूनों के लिए दबाव बनाया जो उन्हें घरों में फंसे रहने, दूसरों पर निर्भर रहने या दया के पात्र के रूप में देखे जाने के बजाय उनके काम करने और समाज में रहने का रास्ता खोलें और उन्हें समाज में योगदान करने वाले लोगों के रूप में देखा जाए। उदाहरण के लिए भारत में केन जहां भी गईं, उनसे कहा गया कि यहां आपकी आंख बना कुत्ता काम नहीं कर पाएगा क्योंकि सड़कों पर इतनी अफरा-तफरी रहती है, गड्ढे हैं, आवारा पशु घूमते हैं और लोग लापरवाही से वाहन चलाते हैं। केन का जवाब होता, ''पहले अमेरिका में भी ऐसे ही हालात थे। आवारा कुत्तों पर अंकुश के लिए उन्हें बांधकर रखने के कानून बनाए गए। सिर्फ नेत्रहीन ही नहीं, सभी लोगों के लिए सड़कें ज्यादा सुरक्षित बनाई गईं।''

उनकी ये बातें सुनकर बहुत से लोग नई संभावनाओं पर विचार करने को प्रेरित होते हैं। मुंबई के अमेरिकन सेंटर में केन को सुनने के बाद विज्ञान की प्रोफेसर और आंशिक रूप से देख सकनेवालीं आशा भेंडे कहती हैं, ''वह नेत्रहीनों के अधिकारों के बारे में बोलती रहीं ...कि हम खुद ही अपने लिए लड़ सकते हैं। हमें हमेशा यह बताया जाता है कि हम क्या नहीं कर सकते। इससे नेत्रहीन व्यक्ति इसी तरह महसूस करने लगता है। हम प्रेरक हस्तियों की ओर आत्मविश्वास बढ़ाने की जरूरत है। मैं खुद से कहती रहती हूं कि मैं ऐसा कर सकती हूं।''

जावेद आबिदी ने नई दिल्ली में विकलांगों के लिए रोजगार को बढ़ावा देने वाला राष्ट्रीय केंद्र स्थापित किया है। वह कहते हैं, ''मोटर न्यूरॉन बीमारी के कारण घूमने-फिरने, हिलने-डुलने और बोलने में असमर्थ होने के बावजूद हॉकिंग दुनिया के जानेमाने भौतिकविद हैं - वह बहुत-से विकलांगों के लिए प्रेरक हस्ती का काम कर रहे हैं, खासकर उनके लिए जो व्हीलचेयर पर ही चलते-फिरते हैं।'' जब हॉकिंग भारत आ रहे थे, तो आबिदी ने इस वैज्ञानिक के कर्मचारियों से संपर्क साधा और हॉकिंग से विकलांगों के अधिकारों पर अपने विचार रखने का आग्रह किया। लेकिन आबिदी को कहा गया कि वह नई दिल्ली के प्रसिद्ध स्थलों पर हॉकिंग को ले जाने का प्रबंध करें। जल्द ही समझ में आ गया कि इनमें से किसी में भी व्हीलचेयर से पहुंचना संभव नहीं था। सार्वजनिक इमारतों और परिवहन तक पहुंच के मामले में भेदभाव न करने के निर्देश से संबंधित विकलांग व्यक्ति कानून-1996 के बावजूद यह स्थिति थी। ''मीडिया ने इस मामले को उछाला और चूंकि यह राष्ट्रीय छवि का मसला था इसलिए रविवार की सुबह वहां लकड़ी की रैंप स्थापित कर दी गईं।'' आबिदी ने बाद में रैंप को स्थायी करवाने के लिए अदालत में मुकदमा जीता।

AIJAZ RAHI © AP-WWP

मुंबई के नेत्रहीनों के विद्यालय में जॉयस केन। उनका कहना है कि उनका समय अपने पति के साथ कम और आंखें बन गए अपने कुत्ते कोरी के साथ अधिक बीतता है, कोरी ने उनकी खोई स्वतंत्रता कुछ हद तक लौटाई है।

इसके बाद अमेरिकी राजूदत के सांस्कृतिक संरक्षण कोष और अमेरिकी दूतावास के सार्वजनिक मामलों के अनुभाग से 20 हजार डॉलर के अनुदान से आबिदी के दल को सरकारी अधिकारियों, ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षणविदों ओर पर्यटन उद्योग के प्रतिनिधियों के साथ जागरूकता कार्यशालाएं आयोजित करने में मदद मिली जिससे कि स्मारकों को नुकसान पहुंचाए बिना ही विकलांगों की उन तक पहुंच हो सके। अमेरिकी और भारतीय विशेषज्ञों के दलों की यात्रा के लिए भी धन उपलब्ध कराया गया। ताजमहल, खजुराहो, सिटी पैलेस (जयपुर) और सारनाथ के मुख्य मंदिर तक व्हीलचेयर पर चलने-फिरने वालों की पहुंच सुनिश्चित की गई। इसके बाद भारतीय पुरातत्व सोसायटी ने सभी अंतर्राष्ट्रीय विरासत स्थलों और राष्ट्रीय ऐतिहासिक स्थलों तक विकलांगों की पहुंच सुनिश्चित कराने की नीति अंगीकार की।

भारत में विकलांगता कानूनों के अन्य हिस्सों पर अमल में प्रगति को लेकर आबिदी अब भी संतुष्ट नहीं हैं। इन कानूनों के तहत कार्यस्थलों और स्कूलों में बाधारहित माहौल सुनिश्चित करने और सरकारी अमले में निचले दर्जे की तीन फीसदी नौकरियां विकलांगों के लिए आरक्षित करने जैसे कदम उठाने का प्रावधान है। आबिदी कहते हैं, ''यह कोई बड़ी फरमाइश नहीं है। यह संसद का कानून है, इसे ऐसे लिया जाता है जैसे यह सिर्फ नीतिगत दस्तावेज हो।''

1997 में एक जनहित याचिका के आधार पर चले मामले के बाद ही विमानों में सीटों की कतारों के बीच में आने-जाने के रास्ते में आ सकने वाली व्हीलचेयर और उन्हें विमान के दरवाजे तक ला सकने वाली लिफ्ट नई दिल्ली के हवाई अड्डे पर उपलब्ध कराई गईं।

आबिदी के अनुसार, ''अन्य स्थानों पर मुझे चार बिल्कुल अप्रशिक्षित व्यक्तियों को झेलना पड़ता है जो मुझे उठाकर इस तरह विमान में ले जाते हैं जैसे कि मैं कोई आलू का बोरा हूं। यह भयभीत कर देता है।'' आबिदी विश्वविद्यालय में पढ़ाई इसलिए कर पाए क्यों कि उनके सहपाठी सीढ़ियां आने पर उन्हें उठाकर ले जाते रहे जिससे कि वह व्याख्यान कक्ष तक वहुंच सकें। वह कहते हैं, ''मैं रातोंरात चमत्कार की मांग नहीं कर रहा हूं। लेकिन जब मरम्मत हो रही होती है और लुभावनी नई मशीनें लगाई जा रही होती हैं तो वे रैंप की योजना क्यों नहीं बना सकते?'' उनके अनुसार नई दिल्ली के ज्यादातर मेट्रो स्टेशनों पर व्हीलचेयर ले जाने के लिए लिफ्ट नहीं हैं। शहर में बनाए गए ज्यादातर नए शौचालयों में दरवाजे बहुत ही संकरे हैं। आबिदी के अनुसार, ''भारत में सात करोड़ लोग विकलांग हैं और इसके अलावा बहुत-से विकलांग यात्री घूमने आते हैं। कल्पना कीजिए कि वे कितनी उलझनों से रूबरू होते होंगे।''

मुंबई की संस्था नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड के मानद महासचिव डॉ. राजेंद्र व्यास (जिन्हें आंशिक रूप से ही दिखलाई पड़ता है) कहते हैं, ''इच्छा होने और समर्थन मिलने पर विरोध पर काबू पाया जा सकता है। हमें मोतियाबिंद और अन्य बीमारियों (जिनसे बचा जा सकता है) से होने वाले अंधेपन को रोकने के लिए चिकित्सा देखभाल मुहैया कराने और नेत्रहीन बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए धन की जरूरत है ताकि उन्हें भी रोजगार के अवसर उपलब्ध हों।'' डॉ. व्यास ध्यान दिलाते हैं कि अमेरिका में 70 फीसदी नेत्रहीन रोजगार में लगे हैं, उनके लिए नौकरियों में आरक्षण नहीं है, सिर्फ कानून द्वारा बराबरी के अवसरों की गारंटी है। वह कहते हैं, ''अमेरिका अपने विकलांगता के शिकार नागरिकों में - मैं कर सकता हूं- की प्रेरणा भरने के लिए उन्हें सुविधाएं मुहैया कराता है और प्रोत्साहित करता है। भारत में अभी हम इस बात पर ही चर्चा कर रहे हैं कि नेत्रहीनों के लिए ज्यादा नौकरियों की

''मैंने जो सबसे बड़ी चीज खोई, वह मेरी आंखों की रोशनी नहीं बल्कि मेरी आजादी थी। अमेरिका में लक्ष्य यह होता है कि आपको रोजगार मिले, आप करदाता बनें और बाकी सभी लोगों की मदद करने के काबिल हों।''

व्यवस्था कैसे की जाए। शिक्षा और प्रशिक्षण महत्वपूर्ण हैं लेकिन हम इमारतों में ब्रेल संकेतक लगाने के चरण तक ही पहुंचे हैं।''

दोनों ही देशों में नेत्रहीनों को पढ़ाने वाले अध्यापकों की कमी है। लेकिन इस काम की व्यापकता में बड़ा अंतर है। भारत में एक करोड़ 45 लाख नेत्रहीन हैं और अमेरिका में 13 लाख। डॉ. व्यास इस बात की ओर ध्यान दिलाते हैं कि दोनों देशों में धन के आवंटन के तौरतरीके भी अलग-अलग हैं। गाइड कुत्ते कोरी को - सीइंग आई ऑर्गेनाइजेशन- ने 30 हजार डॉलर खर्च कर दस साल के उपयोगी काम के लिए प्रशिक्षित किया। भारत में इस राशि में इतने ही समय के लिए किसी व्यक्ति की सेवा ली जा सकती है।

इसके बावजूद कोरी की खामोश मौजूदगी और केन के गाइड के रूप में प्रदर्शित योग्यता ने भारत में नई संभावनाएं जगाई हैं। कभी भी कुत्ते को न छूने वाले बहुत से नेत्रहीन बच्चों और बड़ों ने उसके बालों में अपनी उंगलियां फिराईं। चिकित्सा विज्ञान के छात्रों और डॉक्टरों ने केन से नेत्रहीनों को स्वावलंबी बनाने के अन्य तरीकों के बारे में जाना जैसे कि टॉकिंग मेडिसिन बोटल या इंसुलिन इंजेक्टर जो क्लिक -क्लिक की आवाज निकालते हों जिससे कि डायबिटीज का शिकार नेत्रहीन व्यक्ति दवा को खुद मिला सके और उसकी मात्रा जान सके। अमेरिका में केन की एक जिम्मेदारी दुकान में रखे सामान की तस्वीर ले सकने वाले और उनके बारे में बोलकर बता सकने वाले अत्याधुनिक बातचीत करने वाले कंप्यूटरों या स्कैनरों जैसे नए आविष्कारों की जांच-परख का है और इसके लिए वह नेशनल फाउंडेशन फॉर द ब्लाइंड के साथ काम करती हैं। केन कहती हैं कि एक परियोजना अभी प्रयोग के चरण में है जो फाउंडेशन के प्रेसिडेंट डॉ. मार्क मौअर का सपना है। इसका लक्ष्य है नेत्रहीनों को कार चलाने की इजाजत दिलाना। केन कहती हैं, ''मैं उम्मीद करती हूं कि मेरे जीतेजी यह हो जाएगा में वे ऐसा कर पाएंगे। दृढ़ निश्चय के साथ आप वहां तक जा सकते हैं जहां तक आपकी उम्मीदें और सपने आपको जाने की इजाजत दें।'' □